जल संकट के समाधान के लिए दुनिया को एकजुट होना होगा : जल शक्ति मंत्री

इंडिया एक्सपो मार्ट के तहत इंडिया वाटर वीक में मंत्रियों और विषेशज्ञों ने दिए पानी बचाने के सुझाव

ग्रेटर नोएडा स्थित इंडिया एक्सपो सेंटर एंड मार्ट में आयोजित इंडिया वाटर वीक 2022 के उद्घाटन समारोह में मंच पर मौजूद राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु, उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत व केंद्रीय मंत्री प्रह्लाद पटेल ● जागरण

जागरण संवाददाता, ग्रेटर नोएडा: दुनिया में कुल उपलब्ध पानी का चार प्रतिशत ही पीने योग्य है और इसका चार प्रतिशत ही पीने योग्य भारत में उपलब्ध है। दुनिया जल संकट और आने वाले समय की चुनौतियों का सामना कर रही है। बढ़ता शहरीकरण, जलवायु परिवर्तन, बेमौसम सूखा, बाढ़, जल प्रदूषण आदि चुनौतियों ने जल संकट को वैश्विक बना दिया है। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए एकजुट होना होगा। एक देश या समाज इसका समाधान नहीं कर सकता। जल संसाधन के प्रबंधन और सार्थक समाधान तलाशने होंगे।

ग्रेटर नोएडा के इंडिया एक्सपो मार्ट में इंडिया वाटर वीक के उद्घाटन अवसर पर केंद्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने यह बातें कही। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जल के महत्व को समझते हुए 2024 में 21 हजार करोड़ के निवेश का लक्ष्य निर्धारित किया है। भारत दुनिया में जल के क्षेत्र में निवेश करने वाला दुनिया का अग्रणी देश है। भारत में दुनिया की 18 प्रतिशत आबादी और इतने ही मवेशी हैं। कृषि जल वायु विविधता के कारण चुनौती बढ़ी हैं।

बढ़ती आबादी और शहरीकरण के कारण जल की मांग बढ़ रही है। पहले प्रति व्यक्ति जल की उपलब्धता पांच हजार क्यूबिक मीटर थी। आज वह 15 सौ क्यूबिक मीटर पहुंच गई है। भारत दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। बढ़ती अर्थव्यवस्था बनाने के लिए जल की उपलब्धता सुनिश्चित करना जरूरी है। इसके लिए समग्र समाधान पर काम करना होगा। इंडिया वाटर वीक के जरिये दुनिया के सामने बढ़ते जल संकट से निपटने के उपाय खोजने में सफलता मिलेगी। कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने कहा कि देश में यह सुनिश्चित करना होगा कि किसी हिस्से में गाड़ी और टैंकर से पानी पहुंचने की जरूरत न पड़े।

महात्मा गांधी ने ग्राम स्वराज की जो परिकल्पना की थी, उसका मतलब गांवों में सिर्फ चुनाव करना नहीं है, जल व स्वच्छता सुनिश्चित भी करना होगा। ग्राम पंचायतों को अधिकार देने होंगे। गांवों में जल जीवन मिशन के तहत जलापूर्ति कार्य हो रहे हैं। कुपोषण के खिलाफ लड़ाई में भी जल की अहम भूमिका है। ग्राम पंचायत पानी के स्रोत के संरक्षण का कार्य करें व वर्षा जल का संरक्षण करें। कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, केंद्रीय राज्य मंत्री प्रहलाद पटेल, बिश्वेश्वर टुडु भी मौजूद रहे।

मुद्दा

पढ़ें जागरण सिटी

पानी है अनमोल, मटके में 'बूंद' सहेज कर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने दिया संदेश

धर्मेंद्र चंदेल ● ग्रेटर नोएडा

- राष्ट्रपति ने मटके में पानी भर किया इंडिया वाटर वीक का उद्घाटन
- भारतीय संस्कृति और ग्रामीण अंचल की पहचान रहा मटका

क्या मुनष्य और क्या जीव-जंतु जल सबके लिए बहुत महत्वपूर्ण है। पानी की हर एक बूंद सहेजनी है। एक-एक बूंद से ही घड़ा भरता है। मंगलवार को ग्रेटर नोएडा के एक्सपो मार्ट में 'इंडिया वाटर वीक' का शुभारंभ भी कुछ इसी अंदाज में हुआ। आमतौर पर किसी कार्यक्रम के शुभारंभ में दीप प्रज्वलन की परंपरा रही है, लेकिन मंगलवार को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने पूरे देश समेत विश्व को एक अलग ही संदेश दिया। उन्होंने ग्रामीण संस्कृति के प्रतीक मटके (घड़े) में पानी भरकर जब 'वाटर वीक' का शुभारंभ किया तो यही संदेश देने का जतन दिखा कि पानी की हर एक बूंद कितनी अनमोल है और उसका संरक्षण कितना जरूरी है। उद्घाटन अवसर पर जल भरो संस्कार हुआ। एक बड़े मटके के साथ छोटे-छोटे मटकों के माध्यम से यह संदेश दिया कि जल संचयन के छोटे प्रयास भी बड़ी गाथा लिख सकते हैं।

भारत की ग्रामीण पृष्ठभूमि में मटके का बड़ा महत्व रहा है। विशेष पहचान के साथ यह ग्रामीण संस्कृति का परिचायक भी है। गर्मी के दिनों में गांवों में जब पानी को शीतल रखने के लिए फ्रिज और बर्फ उपलब्ध नहीं हुआ करती थी, गांव के लोग मटके में ही पीने के लिए पानी भरकर रखते थे। गुजरात में जल संरक्षण के क्षेत्र में काम करने वालीं हीराबेन का कहना है कि मटके में पानी भरने से उसमें शुद्धता आती है। शरीर को उससे पोषक तत्व मिलते हैं। मटके का पानी शरीर के लिए नुकसानदायक नहीं होता। पहले पानी के टैंकर नहीं होते थे। गांव की महिलाएं दूर-दराज से पानी लाती थी तो वह मटके का ही इस्तेमाल करती थीं। मटका मिट्टी का बना होता है। मिट्टी से ही पानी निकलता है।

जल की समस्या अब बारहमासी बन चुकी है। इसके संरक्षण के प्रति लोगों में संजीदगी नहीं दिखती। उन्हें लगता है कि उनके जल संरक्षण करने से समस्या थोड़े ही सुलझने वाली है ? भूजल के दोहन से धरती की कोख सूखती जा रही है। राष्ट्रपति से मटके में पानी भरवाकर 'वाटर वीक' की शुरुआत कर वास्तव में भारत ने दुनिया को संदेश दिया है कि बूंद-बूंद से घड़ा भरता है और पानी को एकत्र करने की सख्त जरूरत है। छोटे स्तर की शुरुआत भी हमारे भविष्य को उज्ज्वल बना सकती है। इसके लिए सार्थक प्रयास की जरूरत है।

nwda.gov.in